पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका

डॉ. वंदना गजराज
सहायक आचार्य,
अपेक्स विश्वविद्यालय,जयपुर

भूमिका

भारतीय पांडुलिपि कला—जिसमें जैन, बौद्ध, राजस्थानी, पाली, मुगल तथा पहाड़ी शैली की चित्रकथाएं शामिल हैं—न केवल साहित्यिक परंपरा की वाहक हैं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास की अमूल्य धरोहर भी हैं। इन पांडुलिपियों में नारी पात्रों का चित्रण सौंदर्य, शक्ति, भक्ति और दार्शनिक प्रतीकों के रूप में हुआ है। प्रस्तुत शोध-पत्र में पांडुलिपि कला में नारी के रूपांकन, उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका तथा कलात्मक तकनीकों का विश्लेषण किया गया है। भारत की प्राचीन और मध्यकालीन पांडुलिपि कला मात्र साहित्य के संरक्षण का साधन नहीं थी, बल्कि दृश्य कला की महत्वपूर्ण विधा भी थी। ताड़पत्र, भोजपत्र और हाथ से बने कागज़ पर रचे गये इन चित्रों में सामाजिक जीवन, धार्मिक विचार और सांस्कृतिक मान्यताएँ सजीव रूप में अंकित हैं। नारी का चित्रण इस कला का केंद्रीय तत्व रहा है, क्योंकि भारतीय समाज में नारी को सौंदर्य, सृजनशीलता, शक्ति और संस्कृति की वाहक माना गया है।

पांडुलिपि कला का ऐतिहासिक परिचय

1. पाली पांडुलिपि परंपरा (8–12वीं शताब्दी) बौद्ध ग्रंथों पर आधारित।
   देवी तारा, प्रज्ञापारमिता आदि स्त्री देवियों का उत्कृष्ट चित्रण।
2. जैन पांडुलिपियाँ (11–15वीं शताब्दी)
   कालकाचार्य कथा, कल्याणमंदिर स्तोत्र, कल्पसूत्र आदि में नारी पात्र नैतिकता और धर्मशिक्षा के प्रतीक।
3. राजस्थानी और पश्चिमी भारतीय पांडुलिपियाँ

राग-रागिनी, रामायण-महाभारत कथाएँ; नारी के भाव, वेशभूषा, परम्पराएँ जीवंत रूप में।

4. मुगल और पहाड़ी शैली (16–18वीं शताब्दी)

ऐतिहासिक व दरबारी स्त्रियाँ; संगीत, नृत्य, प्रेम और प्रकृति से जुड़ी स्त्री छवियाँ।

पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण

1. सौंदर्य एवं सौंदर्यानुभूति का प्रतीक

नारी को रूप-लावण्य, कोमलता और सांस्कृतिक मर्यादा के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया।

- कोमल रंगों का उपयोग
- सुकोमल रेखांकन
- पारंपरिक आभूषण और परिधान

नारी की शारीरिक भाषा भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनती है—लज्जा, करुणा, प्रेम, भक्ति, वीरता आदि।

2. देवी-स्वरूप नारी का चित्रण

भारतीय पांडुलिपियों में देवी की उपासना ने नारी को शक्ति और करुणा दोनों रूपों में स्थापित किया।

- प्रज्ञापारमिता – ज्ञान की देवी
- तारा – संरक्षण की देवी
- दुर्गा-काली – शक्ति और विजय का प्रतीक

इन चित्रों में नारी की दैवीय ऊर्जा और आध्यात्मिक महत्व उभरकर आता है।

3. धार्मिक एवं नैतिक आदर्श के रूप में नारी

विशेषकर जैन पांडुलिपियों में नारी पात्र—रूपमती, चंद्रप्रभा की माता, राजा-रानियाँ—धार्मिक नियमों, तप, त्याग और संयम की प्रतीक हैं।

उनकी छवियाँ समाज के नैतिक आदर्शों को संप्रेषित करती हैं।

4. नारी की भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक उपस्थिति

मुगल और पहाड़ी शैली में स्त्रियों को उनके निजी क्षणों में चित्रित किया गया:

- श्रृंगार, नृत्य, वीणा-वादन
- प्रेम-संवाद
- विरह और प्रतीक्षा

यह चित्रण उनकी आंतरिक दुनिया और संवेदनशीलता को दर्शाता है।

5. सामाजिक जीवन में स्त्री की भूमिकाएँ

पांडुलिपियों में अनेक भूमिकाओं वाली स्त्रियाँ मिलती हैं: माता, रानी, साध्वी, योद्धा, कर्तव्यनिष्ठ पत्नी।

इन रूपों के माध्यम से उस समय के सामाजिक ढांचे में नारी की स्थिति और मूल्य दृष्टि समझ में आती है।

नारी पात्रों की सांस्कृतिक भूमिका :-

1. संस्कृति की वाहक और परंपरा की संरक्षक

नारी को लोक परंपराओं, कला, संगीत, गृह-व्यवस्था और नैतिक मूल्यों की संरक्षक के रूप में दिखाया गया—जिससे सामाजिक ताने-बाने की निरंतरता बनी रहती है।

2. आध्यात्मिकता और धार्मिक शिक्षाओं की माध्यम

पांडुलिपियों की कहानियों में नारी ईश्वर के प्रति भक्ति और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरक शक्ति बनती है। माता-देवी-साध्वी के रूपों में नारी समाज को धर्म और नैतिकता की दिशा दिखाती है।

3. सामंतवादी समाज में स्त्री की स्थिति का प्रतिबिंब

चित्रों में स्त्री की भूमिकाएँ अक्सर समाज की सीमाओं को भी व्यक्त करती हैं—

- कभी वह पुरुष-केंद्रित संरचना में बंधी
- कभी स्वतंत्र और शक्तिशाली

इस प्रकार पांडुलिपि कला सामाजिक संरचना की आलोचना और समझ दोनों प्रस्तुत करती है।

4. सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक

विभिन्न क्षेत्रों की पांडुलिपियों में स्त्री के वेश, आभूषण, रंग, भाव-क्षेत्रीय संस्कृति का सजीव परिचय देते हैं।

उदाहरण:

- राजस्थान की स्त्री चमकीले रंगों और भारी आभूषणों में
- बंगाल की स्त्री सरल परिधानों और प्राकृतिक परिवेश के साथ
- कश्मीर-पहाड़ी चित्रों में नारी प्रकृति में विलीन दिखाई देती है

कलात्मक तकनीकें जिनसे नारी का चित्रण प्रभावित हुआ

1. रेखांकन – कोमल, प्रवाहपूर्ण रेखाएँ, स्त्री की भावनाओं को व्यक्त करती हैं।
2. रंग योजना – लाल, पीला, नीला, हरा आदि पारंपरिक रंग, भावनाओं के अनुरूप।
3. सजावट एवं अलंकरण – आभूषण, वस्त्र-विन्यास और पृष्ठभूमि स्त्री की सामाजिक स्थिति का संकेत।
4. दृश्य-संयोजन – स्त्री को अक्सर केंद्र में रखा जाता है, जो उसकी सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता है।

भारत को विश्व गुरु बनाने में नारी पात्रों और पांडुलिपि कला की अहम भूमिका

विश्वगुरु बनने के लिए प्राचीन काल के आधार पर वर्तमान में किए जाने वाले प्रयास

प्राचीन भारत का सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान विश्व को प्रेरणा देने वाला रहा है। पांडुलिपियों में निहित नारी पात्रों के माध्यम से न केवल कला और संस्कृति बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक आदर्श भी प्रकट होते हैं। आज जब भारत विश्वगुरु बनने का संकल्प ले चुका है, तब प्राचीन काल की इस अमूल्य विरासत से सीख लेकर निम्नलिखित प्रयास आवश्यक हैं:

1. सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और प्रचार

डिजिटलाइजेशन: पांडुलिपियों और नारी पात्रों के चित्रण का डिजिटल रूपांतरण ताकि विश्वभर के लोग इन्हें देख और अध्ययन कर सकें।

संग्रहालयों और प्रदर्शनी: पांडुलिपि कला और नारी पात्रों पर केंद्रित विशेष संग्रहालय एवं प्रदर्शनी का

आयोजन।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुति: भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को विश्व के प्रमुख मंचों पर प्रदर्शित करना।

2 शिक्षा और शोध में विस्तार

- शैक्षिक पाठ्यक्रमों में समावेश: विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पांडुलिपि कला और नारी पात्रों का समावेश।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग: विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों के साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक सहयोग बढ़ाना।
- अनुवाद और प्रकाशन: प्राचीन पांडुलिपियों के महत्वपूर्ण ग्रंथों का आधुनिक भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन।

3 सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता

- सामाजिक मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म: नारी पात्रों की सांस्कृतिक भूमिका को जागरूक करने के लिए सोशल मीडिया अभियानों का संचालन।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम: लोक कला, नाटक, नृत्य और संगीत के माध्यम से नारी पात्रों की महत्ता का प्रसार।
- सामाजिक सुधार: प्राचीन आदर्शों के अनुरूप नारी सम्मान, सशक्तिकरण और समानता को बढ़ावा देना।

4 नवाचार और समकालीन संदर्भ में पुनः व्याख्या

- आधुनिक कला में पुनरुत्थान: नारी पात्रों के चित्रण को समकालीन कला एवं मीडिया में प्रस्तुत करना।
- फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और साहित्य: पांडुलिपि नारी पात्रों की कहानियों को वर्तमान संदर्भ में जीवंत करना।
- सांस्कृतिक पर्यटन: पांडुलिपि कला से जुड़े स्थलों का पर्यटन विकास, जिससे आर्थिक व सांस्कृतिक उन्नति हो।

निष्कर्ष :

प्राचीन पांडुलिपि कला में निहित नारी पात्रों के चित्रण और उनकी सांस्कृतिक भूमिका ने भारत को एक

विशिष्ट पहचान दी है। पांडुलिपि कला में नारी पात्र केवल सौंदर्य का विषय नहीं थे, बल्कि समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक धारणाओं के महत्वपूर्ण वाहक थे।इन चित्रों में नारी—कभी देवी, कभी साध्वी, कभी प्रेमिका, कभी योद्धा—के रूप में एक बहुआयामी व्यक्तित्व रखती है।

पांडुलिपि कला के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में नारी को सदैव महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आधारशिला माना गया। यह कला हमें न केवल सौंदर्यबोध प्रदान करती है बल्कि समाज की गहरी मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक परतों को भी उजागर करती है। वर्तमान समय में यदि हम प्राचीन ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करते हुए उपर्युक्त प्रयास करें, तो न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत संजोई जा सकेगी, बल्कि भारत विश्व गुरु के रूप में अपनी भूमिका को मजबूती से निभा सकेगा। पांडुलिपि कला में नारी पात्रों का चित्रण न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि वह उस काल की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं का दर्पण भी है। नारी की विविध भूमिका और उसकी सांस्कृतिक महत्ता को समझना और संरक्षित करना आवश्यक है ताकि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को बेहतर ढंग से समझ सकें।

संदर्भ सूची (References)

1. भारतीय लघुचित्र परंपरा – ए. के. कुम्भोज
2. Indian Miniature Painting – Basil Gray
3. Jain Manuscripts and Painting – Kalpana Desai
4. The Arts of India – Ananda K. Coomaraswamy
5. मध्यकालीन भारतीय पांडुलिपि कला – विभिन्न शोध आलेख